IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 10, June 2026
Impact Factor: 8.2

हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकभाषा, लोकगीत और सांस्कृतिक अस्मिता का स्वरूप

सत्येंद्र कुमार[1] and डॉ. राकेश आर्य[2]
[1]शोधार्थी, हिन्दी-विभाग
[2]सहायक प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश: हिंदी आदिवासी साहित्य समकालीन भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसमें आदिवासी समुदायों के सामाजिक जीवन, प्रकृति-संबंध, श्रम-संस्कृति, लोकविश्वास, परंपराओं और सांस्कृतिक अस्मिता का सशक्त चित्रण मिलता है। इस साहित्य की विशिष्टता केवल इसके विषयों में नहीं, बल्कि इसकी भाषिक संरचना और अभिव्यक्ति-पद्धति में भी निहित है। लोकभाषा, लोकगीत, मिथक, कहावतें, लोककथाएँ और मौखिक परंपराएँ आदिवासी साहित्य को उसकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान प्रदान करती हैं। आदिवासी साहित्य में भाषा संप्रेषण का साधन मात्र नहीं, बल्कि सामुदायिक स्मृति, इतिहास और सांस्कृतिक ज्ञान की संवाहक है। इसी प्रकार लोकगीत आदिवासी जीवन के सुख-दुःख, प्रेम, श्रम, उत्सव, प्रकृति और संघर्ष को सामूहिक स्वर प्रदान करते हैं। समकालीन हिंदी आदिवासी लेखन में इन लोक-सांस्कृतिक तत्वों का प्रयोग सांस्कृतिक वर्चस्व और पहचान के संकट के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में भी दिखाई देता है। हिंदी में आदिवासी लेखन का विस्तार अनुवाद, रूपांतरण और द्विभाषिक लेखन के माध्यम से हुआ है, जबकि मूल आदिवासी भाषाएँ उसकी सांस्कृतिक जड़ों को सुरक्षित रखती हैं।

मुख्य संकेतक: -आदिवासी साहित्य, लोकभाषा, लोकगीत, लोकसंस्कृति, सांस्कृतिक अस्मिता, मौखिक परंपरा, प्रकृति, पहचान।

I. परिचय

भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना बहुभाषिक, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक रही है। आदिवासी समुदाय इस बहुलतापूर्ण संरचना के महत्वपूर्ण अंग हैं। उनका जीवन जंगल, भूमि, जल, प्रकृति, सामुदायिक संबंधों और परंपरागत ज्ञान से गहराई से जुड़ा रहा है। लंबे समय तक मुख्यधारा के साहित्य और इतिहास में आदिवासी समुदायों की अपनी आवाज़ अपेक्षाकृत कम दिखाई दी। समकालीन आदिवासी साहित्य ने इस स्थिति को बदलते हुए आदिवासी जीवन को स्वयं उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श का विकास इसी व्यापक सामाजिक परिवर्तन से जुड़ा हुआ है। गुप्ता (2011) के अनुसार आदिवासी विमर्श सांस्कृतिक पहचान, संसाधनों पर अधिकार और अस्तित्व के प्रश्नों को साहित्यिक

II. अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

हिंदी आदिवासी साहित्य को केवल हिंदी भाषा में लिखे गए साहित्य तक सीमित करना उचित नहीं है। आदिवासी साहित्य की मूल आधारभूमि अनेक स्थानीय और जनजातीय भाषाओं तथा मौखिक परंपराओं में मौजूद है। हिंदी ने इन अनुभवों को व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँचाने का माध्यम प्रदान किया है। इसी कारण हिंदी में आदिवासी साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष अनुवाद, रूपांतरण और भाषिक अंतःक्रिया से निर्मित होता है। INFLIBNET के अध्ययन में भी यह स्पष्ट किया गया है कि हिंदी आदिवासियों की मातृभाषा नहीं है और आदिवासी साहित्य का हिंदी में विस्तार अनुवाद तथा आदिवासी लेखकों द्वारा हिंदी में लेखन दोनों के माध्यम से हुआ है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 10, June 2026
Impact Factor: 8.2

III. लोकभाषा का स्वरूप और साहित्यिक महत्व

आदिवासी साहित्य में लोकभाषा सांस्कृतिक अनुभव की मूल संवाहिका है। लोकभाषा में केवल स्थानीय शब्दावली नहीं होती, बल्कि उसमें किसी समुदाय की जीवन-दृष्टि, प्रकृति के प्रति उसका संबंध, सामाजिक संबंधों की संरचना, पारंपरिक ज्ञान और सामूहिक स्मृतियाँ भी निहित होती हैं। इसलिए आदिवासी साहित्य में प्रयुक्त देशज शब्द साहित्य को केवल भाषिक विशिष्टता ही नहीं देते, बल्कि उसे सांस्कृतिक प्रामाणिकता भी प्रदान करते हैं।

समकालीन आदिवासी लेखक हिंदी का प्रयोग करते हुए भी अपनी मूल भाषाओं और बोलियों के शब्दों, मुहावरों तथा सांस्कृतिक प्रतीकों को बनाए रखते हैं। इससे हिंदी का स्वरूप अधिक बहुलतापूर्ण बनता है। रविन्द्र कुमार मीना (2020) ने आदिवासी साहित्य की चर्चा करते हुए रेखांकित किया है कि आदिवासी रचनाकार अपनी मूल भाषाओं में साहित्य-सृजन की ओर भी अग्रसर हैं और हिंदी में व्यक्त साहित्य उनकी भाषाई-सांस्कृतिक परंपरा से प्रभावित है।

लोकभाषा का प्रयोग आदिवासी साहित्य में प्रभुत्वशाली भाषिक संरचनाओं के प्रति वैकल्पिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता है। मानक हिंदी के भीतर देशज शब्दों और लोक-प्रयोगों की उपस्थिति साहित्य की भाषिक सीमाओं को विस्तृत करती है। यह प्रक्रिया आदिवासी अनुभव को कृत्रिम रूप से मुख्यधारा की भाषा में ढालने के बजाय उसके मूल सांस्कृतिक संदर्भ को बचाने का प्रयास करती है।

IV. लोकभाषा और सांस्कृतिक स्मृति

किसी भी समुदाय की भाषा उसकी सामूहिक स्मृति का महत्वपूर्ण भंडार होती है। आदिवासी समाजों के संदर्भ में यह तथ्य और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उनकी अनेक सांस्कृतिक परंपराएँ लंबे समय तक मौखिक रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित होती रही हैं। लोककथाएँ, लोकगीत, कहावतें, मिथक और अनुष्ठानिक अभिव्यक्तियाँ इसी मौखिक परंपरा के अंग हैं।

आदिवासी भाषाओं के सामने आधुनिकता, विस्थापन, भाषिक वर्चस्व और सामाजिक परिवर्तन से जुड़े संकट हैं। भाषा के कमजोर होने का प्रभाव केवल संचार पर नहीं पड़ता, बल्कि उसके साथ जुड़े लोकज्ञान, मिथकीय स्मृतियों और सांस्कृतिक व्यवहारों पर भी पड़ता है। 2022 में प्रकाशित एक अध्ययन में आदिवासी भाषा और संस्कृति के सामने उपस्थित चुनौतियों तथा मातृभाषा के महत्व को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

इस दृष्टि से हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकभाषा का प्रयोग सांस्कृतिक संरक्षण की प्रक्रिया बन जाता है। जब कोई रचनाकार अपनी रचना में स्थानीय शब्दों, पारंपरिक संबोधनों, लोक-प्रतीकों और भाषिक लय को सुरक्षित रखता है, तब वह अपनी सांस्कृतिक स्मृति को भी साहित्य में संरक्षित करता है।

V. आदिवासी लोकगीतों की परंपरा

लोकगीत आदिवासी साहित्य और लोकसंस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण माध्यमों में से एक हैं। लोकगीतों का संबंध जीवन के लगभग प्रत्येक महत्वपूर्ण अवसर से होता है—जन्म, विवाह, कृषि, पर्व-त्योहार, ऋतु-परिवर्तन, प्रेम, श्रम, मृत्यु और सामुदायिक उत्सव आदि। इन गीतों में व्यक्तिगत अनुभव सामूहिक अनुभव में बदल जाता है।

आदिवासी लोकगीतों की प्रमुख विशेषता उनकी मौखिकता और सामुदायिकता है। वे किसी एक लेखक की निजी रचना न होकर सामूहिक सांस्कृतिक अनुभव की अभिव्यक्ति होते हैं। आदिवासी लोकगीतों में प्रकृति, श्रम, सामाजिक संबंधों, पर्व-त्योहारों और सामुदायिक भावनाओं के साथ-साथ पीड़ा, आक्रोश और संघर्ष के स्वर भी दिखाई देते हैं।

लोकगीतों की यही विशेषता उन्हें सांस्कृतिक दस्तावेज बनाती है। इनमें किसी समुदाय के जीवन का वह पक्ष संरक्षित रहता है जो औपचारिक इतिहास में प्रायः दर्ज नहीं हो पाता। खेतों में काम करते हुए गाए जाने वाले गीत श्रम को केवल शारीरिक क्रिया न मानकर सामूहिक जीवन और आनंद से जोड़ते हैं। पर्व-गीत सामाजिक एकता को मजबूत करते हैं, जबकि प्रकृति से जुड़े गीत मनुष्य और पर्यावरण के पारंपरिक संबंध को व्यक्त करते हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 10, June 2026
Impact Factor: 8.2

VI. लोकगीत और प्रकृति-संवेदना

आदिवासी साहित्य की एक विशिष्ट पहचान उसकी प्रकृति-केंद्रित जीवन-दृष्टि है। जंगल, पहाड़, नदी, पशु-पक्षी, वृक्ष और भूमि आदिवासी जीवन में केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक और सामुदायिक अस्तित्व के अभिन्न अंग हैं। इसलिए आदिवासी लोकगीतों में प्रकृति का मानवीकरण और उसके साथ आत्मीय संबंध बार-बार दिखाई देता है।

प्रकृति से संबंधित गीतों में नदी को संबंधी, जंगल को जीवनदाता और भूमि को मातृरूप में देखने की प्रवृत्ति मिलती है। इस प्रकार लोकगीत आदिवासी समाज की पर्यावरणीय चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। आधुनिक विकास परियोजनाओं, खनन, औद्योगीकरण और विस्थापन के कारण जब प्राकृतिक परिवेश प्रभावित होता है, तब उसके साथ सांस्कृतिक जीवन भी संकटग्रस्त होता है। हिंदी आदिवासी साहित्य इस संकट को केवल आर्थिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व के संकट के रूप में देखता है।

VII. लोकगीत और सामुदायिक जीवन

आदिवासी समाज की सांस्कृतिक संरचना में सामुदायिकता का विशेष महत्व है। लोकगीत इस सामुदायिक जीवन को सक्रिय बनाए रखने का माध्यम हैं। गीतों का सामूहिक गायन सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है और नई पीढ़ी को परंपरागत ज्ञान तथा मूल्यों से परिचित कराता है।

लोकगीतों के माध्यम से बच्चों और युवाओं तक पूर्वजों की स्मृतियाँ, सामाजिक मान्यताएँ, नैतिक मूल्य, कृषि-ज्ञान, प्राकृतिक संकेत और सामुदायिक इतिहास पहुँचता है। इस प्रकार लोकगीत मनोरंजन के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा की भूमिका भी निभाते हैं। साहित्य अकादेमी के एक प्रकाशन में आदिवासी भाषाओं के लेखकों द्वारा अपनी भाषाओं में सृजन तथा मूल भाषा के साथ हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद में प्रस्तुति की परंपरा का उल्लेख मिलता है।

VIII. लोकभाषा, लोकगीत और सांस्कृतिक अस्मिता

सांस्कृतिक अस्मिता का अर्थ किसी समुदाय की उस विशिष्ट पहचान से है जो उसकी भाषा, परंपराओं, विश्वासों, जीवन-पद्धति, इतिहास और सामूहिक स्मृतियों से निर्मित होती है। आदिवासी संदर्भ में भाषा और संस्कृति का संबंध अत्यंत गहरा है। यदि किसी समुदाय की भाषा कमजोर होती है तो उसके साथ जुड़े अनेक सांस्कृतिक संदर्भ भी कमजोर पड़ सकते हैं।

आदिवासी साहित्य में इसलिए अस्मिता का प्रश्न केवल सामाजिक सम्मान का प्रश्न नहीं है, बल्कि भूमि, जंगल, भाषा, संस्कृति और सामुदायिक अधिकारों से भी जुड़ा है। Wessler (2020) ने हिंदी साहित्य में दलित और आदिवासी आवाज़ों के उभार को हाशियाकरण से पहचान की पुनर्स्थापना की दिशा में महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखा है।

लोकभाषा और लोकगीत इस अस्मिता को अभिव्यक्त करने के दो महत्वपूर्ण माध्यम हैं। लोकभाषा समुदाय को अपनी विशिष्ट आवाज़ देती है, जबकि लोकगीत सामूहिक स्मृति और भावनात्मक एकता को बनाए रखते हैं। दोनों मिलकर सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता और पहचान-बोध को मजबूत करते हैं।

IX. हिंदी आदिवासी कविता में लोक-संस्कृति

समकालीन हिंदी आदिवासी कविता में लोकभाषा, लोकगीत और सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। निर्मला पुतुल, रामदयाल मुंडा और अन्य आदिवासी रचनाकारों की कविताओं में प्रकृति, स्त्री, श्रम, जंगल, विस्थापन, समुदाय और सांस्कृतिक संघर्ष प्रमुख विषय बनते हैं। आदिवासी साहित्य पर उपलब्ध सामग्री में निर्मला पुतुल की नगाड़े की तरह बजते शब्द और रामदयाल मुंडा की नदी और उसके संबंधी जैसी कृतियों को आदिवासी कविता की महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियों के रूप में रेखांकित किया गया है।

इन रचनाओं में लोक-संवेदना आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक प्रश्नों के साथ जुड़ती है। परिणामस्वरूप लोकगीत और लोकभाषा केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं रह जाते, बल्कि वर्तमान संघर्षों की अभिव्यक्ति के साधन बन जाते हैं। यही आधुनिक आदिवासी साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 10, June 2026
Impact Factor: 8.2

X. लोकसंस्कृति और स्त्री-अनुभव

आदिवासी लोकगीतों में स्त्री का अनुभव भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विवाह, प्रेम, मातृत्व, श्रम, परिवार, उत्सव और सामाजिक संबंधों से जुड़े गीतों में स्त्रियों की सामूहिक भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं। समकालीन आदिवासी लेखन में स्त्री केवल लोक-संस्कृति की वाहक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक प्रतिरोध की सक्रिय प्रतिनिधि के रूप में भी उभरती है।

स्त्री द्वारा गाए जाने वाले लोकगीतों में घरेलू और सामाजिक अनुभवों के साथ-साथ विस्थापन, गरीबी, श्रम और बदलती जीवन-स्थितियों की पीड़ा दिखाई दे सकती है। इस प्रकार लोकगीत स्त्री-अनुभव को सार्वजनिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

सांस्कृतिक वर्चस्व के विरुद्ध प्रतिरोध

आदिवासी साहित्य में सांस्कृतिक अस्मिता का प्रश्न प्रतिरोध से भी जुड़ा हुआ है। आधुनिक विकास, बाजार, शहरीकरण और सांस्कृतिक एकरूपता के प्रभाव से आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जीवन-पद्धति में परिवर्तन आया है। भूमि से विस्थापन के साथ भाषा, लोककला, खेल, रीति-रिवाज और पारंपरिक ज्ञान के क्षरण की समस्या भी उत्पन्न होती है।

ऐसे संदर्भ में लोकभाषा का प्रयोग सांस्कृतिक प्रतिरोध बन जाता है। रचनाकार जब स्थानीय शब्दों और प्रतीकों को साहित्य में स्थान देता है, तो वह भाषिक प्रभुत्व को चुनौती देता है। इसी प्रकार लोकगीत सामुदायिक इतिहास और स्मृति को जीवित रखकर सांस्कृतिक विस्मृति का प्रतिरोध करते हैं।

XI. मौखिक परंपरा से लिखित साहित्य तक

आदिवासी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता मौखिक परंपरा से लिखित साहित्य की ओर संक्रमण है। आदिवासी समाज में कथा, गीत, मिथक और लोकज्ञान लंबे समय तक मौखिक रूप में संरक्षित रहे। आधुनिक साहित्य ने इन परंपराओं को लिखित रूप प्रदान किया और व्यापक समाज तक पहुँचाया।

इस प्रक्रिया में एक चुनौती भी मौजूद है। मौखिक परंपरा को लिखित हिंदी में रूपांतरित करते समय उसकी मूल भाषिक लय, सांस्कृतिक संदर्भ और अर्थ-छवियों के क्षीण होने की संभावना रहती है। इसलिए आदिवासी साहित्य के अध्ययन में केवल हिंदी पाठ को देखना पर्याप्त नहीं है; उसके पीछे मौजूद मूल भाषाओं और मौखिक परंपराओं को भी समझना आवश्यक है। यही कारण है कि आदिवासी भाषाओं और मौखिक परंपराओं को साहित्य का प्राथमिक स्रोत मानने की आवश्यकता पर विद्वानों ने बल दिया है।

XII. समकालीन संदर्भ में सांस्कृतिक अस्मिता

आज आदिवासी सांस्कृतिक अस्मिता अनेक स्तरों पर चुनौती का सामना कर रही है। वैश्वीकरण, बाजारवाद, विस्थापन, शहरीकरण, भाषाई परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव आदिवासी जीवन-पद्धति को प्रभावित कर रहे हैं। इसके बावजूद साहित्य सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने का महत्वपूर्ण माध्यम बना हुआ है।

हिंदी में आदिवासी साहित्य का विस्तार इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह स्थानीय अनुभवों को राष्ट्रीय साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बनाता है। दूसरी ओर, मूल आदिवासी भाषाओं में लेखन अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता को अधिक प्रत्यक्ष रूप में सुरक्षित रखता है। इसलिए हिंदी और आदिवासी भाषाओं के बीच अनुवाद एवं संवाद सांस्कृतिक संरक्षण और व्यापक साहित्यिक संप्रेषण दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

XIV. निष्कर्ष

हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकभाषा, लोकगीत और सांस्कृतिक अस्मिता परस्पर गहराई से जुड़े हुए हैं। लोकभाषा आदिवासी समुदाय की सांस्कृतिक स्मृति, लोकज्ञान और जीवन-दृष्टि को अभिव्यक्ति देती है; लोकगीत सामूहिक अनुभव, श्रम, उत्सव, प्रकृति, प्रेम और संघर्ष को स्वर प्रदान करते हैं; जबकि सांस्कृतिक अस्मिता इन दोनों माध्यमों के द्वारा अपने अस्तित्व और विशिष्ट पहचान की रक्षा करती है। इस साहित्य को केवल पीड़ा, शोषण या पिछड़ेपन का साहित्य मानना इसकी व्यापकता को सीमित करना होगा। समकालीन हिंदी आदिवासी साहित्य में प्रकृति, सामुदायिकता, समानता, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक अधिकारों की सकारात्मक जीवन-दृष्टि भी मौजूद है। हिंदी आदिवासी साहित्य की वास्तविक शक्ति इस बात में है कि वह लोक और आधुनिकता, मौखिकता और लिखित परंपरा, स्थानीयता और व्यापक साहित्यिक संसार के बीच संवाद स्थापित करता है। अतः लोकभाषा और लोकगीतों का

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 10, June 2026
Impact Factor: 8.2

अध्ययन आदिवासी साहित्य की सांस्कृतिक संरचना को समझने के साथ-साथ भारतीय समाज की बहुलतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए भी आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, आर. (2011). हिंदी साहित्य चर्चा: सामाजिक, सांस्कृतिक और तार्किक आयाम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंजीनियरिंग साइंस एंड ह्यूमैनिटीज़, 1(3), 41-48।
2. मीना, जी. एस. (2013)। जपानीस साहित्य चर्चा: चुनौतियाँ और संभावनाएँ। फॉरवर्ड प्रेस.
3. मीना, आर. कु. (2020)। जज़बान चर्चा: सिद्धांत और स्वरूप। अपनी माटी.
4. पुतुल, एन. (2015)। नागाड़े की तरह बजते शब्द. राजकमल प्रकाशन.
5. रमणिका गुप्ता. (2022)। जनेऊ, भाषा संस्कृति और विकास की चुनौतियाँ। सेतु, जुलाई 2022।
6. वागर्थ. (2022)। जवान जीवन साहित्य और—नया मुद्दा। वागर्थ, अप्रैल 2022।
7. वेस्लर, एच. (2020)। हाशिए पर जाने से लेकर पहचान की पुनः खोज तक: हिंदी साहित्य में दलित और आदिवासी आवाज़ें। स्कैंडो-इंडिका, 40(2), 159-174।
8. देवेश, शि. (2022)। उत्तराखंड का लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक रूप। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 10(2)।
9. देसमुख, नि. (2022)। जाब्ते लोककला और जाब्ते साहित्य का महत्व. अनुसंधानद्वार।
10. कुमार, जी. (2022)। जापानी साहित्य का स्वरूप और अस्मिता। विश्वहिन्दीजन